ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 128-129

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

विकासखण्ड बसखारी में भूमि उपयोग का भौगोलिक अध्ययन

1. अब्दुल कलाम
2. डॉ0 वीरेन्द्र कुमार दुबे

1. शोध अध्येता, 2. शोध निर्देशक–विभागाध्यक्ष– भूगोल विभाग, श्री दुर्गा जी पी0जी0 कालेज, चण्डेश्वर–आजमगढ़ (उ0प्र0), भारत

Received-29.05.2024, Revised-05.06.2024, Accepted-10.06.2024 E-mail: abdulkalam224129@gmail.com

सारांश: *भूमि एक महत्वपूर्ण संसाधन है, भूमि का उपयोग विभिन्न कार्यों के लिये किया जाता है। जैसे– कृषि, वानिकी, खनन, सड़क निर्माण उद्योगों की स्थापना आदि। भूमि का उपयोग मानव अपनी आवश्यक्ता के अनुसार करता है। भूमि उपयोग में भू–भाग का प्राकृतिक स्वरूप नष्ट हो जाता है और मानवीय क्रियाओं का हस्तक्षेप बढ़ जाता है।[1] विश्व के सभी देशों के लिये भूमि महत्वपूर्ण संसाधनों में से एक है। भूमि स्थाई एवं सीमित संसाधन है और जनसंख्य वृद्धि के अनुरूप इस संसाधन में वृद्धि नहीं की जा सकती भारत का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल लगभग 32.87 लाख वर्ग किमी0 है, जो कि विश्व के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 2.4 प्रतिशत है। भूमि उपयोग भौगोलिक अध्ययन का महत्वपूर्ण पहलू है। भूमि उपयोग के अन्तर्गत सभी प्रकार की भूमि का अनुकूलतम उपयोग और वैकल्पिक भूमि उपयोग प्रस्तुत करने के मध्य निर्णायक प्रक्रिया में उत्पन्न समस्या का अध्ययन सम्मिलित है।[2] किसी देश या प्रदेश की भूमि उपयोग को निर्धारित करने वाले विभिन्न कारक हैं जिसमें धरातल की आकृति, मिट्टी के प्रकार, जलापूर्ति, जनसंख्या घनत्व और कृषि तकनीकी प्रमुख हैं।[3]*

कुंजीभूत शब्द– संसाधन, वानिकी, सड़क निर्माण, भू–भाग, मानवीय क्रियाओं, भौगोलिक क्षेत्रफल, निर्णायक, जनसंख्या घनत्व।

कृषि भूमि–उपयोग से अभिप्राय उस भूमि से है, जिसका उपयोग कृषि फसलों के उत्पादन में होता है। इसके अन्तर्गत भूमि उपयोग के तीन उपादानों को सम्मिलित किया जाता है, जिनमें शुद्ध बोया गया क्षेत्र, सिंचित क्षेत्र तथा एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्र का अध्ययन किया जाता है।

मानव पृथ्वी पर एक सक्रिय कारक के रूप में अपनी भूमिका अदा करता है, जो अपने जीवन यापन के लिये कृषि भूमि का उपयोग करता है। स्वाभाविक रूप से जीवन निर्वाह के लिये भूमि उपयोग के विभिन्न प्रतिमानों का प्रयोग करता है। मनुष्य भोजन एकत्र करने तथा जीवित रहने के लिये एक मात्र साधन कृषि ही है। इस प्रकार भूमि उपयोग का विस्तृत मूल्यांकन योजना बनाने के लिये आधार भूत तथ्य है। मानव के आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास के लिये संसाधन के रूप में भूमि की महत्वपूर्ण भूमिका है। वर्तमान समय में जहां जनसंख्या वृद्धि एक चुनौति है, वहीं पर मानव के आर्थिक विकास के लिये भूमि का अनुकुलतम उपयोग विशेष महत्व रखता है। भूमि पर सघन कृषि, सिंचाई सुविधाओं का विकास, अकृष्य भूमि को कृषि योग्य बनाने एवं नवीन तकनीकों का उपयोग मुख्तः मानव के प्रबंध पर निर्भर है।

वर्तमान समय में भारत में कृषि परिवर्तन एवं विकास मजबूरी ही नहीं, अपितु आवश्यक भी है। अतः देश में कृषि प्रतिरूपों एवं तकनीकों में परिवर्तन के साथ–साथ सुधार की भी आवश्यक्ता समझी गई। शायद इसीलिए पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि को प्राथमिक्तास दी गई।

भारत में कृषि वैज्ञानिकों एवं योजनाकारों ने स्वीकार्य किया है कि देश में कृषि का विकास किये बिना औद्योगिक विकास सम्भव नहीं है। अतः नीति आयोग ने कृषि विकास के साथ–साथ सिंचाई सुविधाओं को वरीयता प्रदान की तथा कृषकों को नई कृषि पद्धतियों तकनीकों के उपयोग के लिये विभिन्न माध्यमों से जागरूक किया गया है, जिससे कृषि के उत्पादन में वृद्धि हो तथा देश आत्म निर्भर हो। इस नवीन पद्धतियों में गहन कृषि उन्नत एवं संशोधित किस्म के बीजों का चयन, समय के साथ सिंचाई, पर्याप्त मात्रा में ऊर्वरकों के उपयोग के साथ ही खाद का उपयोग एवं हॉनिकारक कीड़े मकोड़ों एवं रोगों से फसलों की रक्षा करना सम्मिलित है। बेकार एवं बंजर भूमि का उद्धार करके उसे कृषि योग्य बनाना बाढ़ जैसी आपदा से फसलों को बचाना एक फसली भूमि को बहुफसली बनाना रसायनों एवं कृषि यंत्रों का प्रयोग कीटनाशकों का प्रयोग परिवहन सुविधाओं का विकास करना आदि महत्वपूर्ण प्रयास है।

अध्ययन क्षेत्र की भौतिक स्थिति – अध्ययन क्षेत्र बसखारी विकासखण्ड जनपद अम्बेडकर नगर प्रमुख विकास खण्ड है। यह जनपद के 9 विकास खण्डों में से एक है। इसका अक्षाशीय विस्तार 26.406877 उत्तरी अक्षांश से 26.585160 उत्तरी अक्षांश तक तथा देशान्तरीय विस्तार 82.8866 पूर्वी देशान्तर से 82.6894 पूर्वी देशान्तर के मध्य विस्तृत है। बसखारी विकास खण्ड के पश्चिम में टाण्डा विकास खण्ड दक्षिण में जलालपुर और भियांव विकास खण्ड पूरब में राम नगर विकास खण्ड तथा उत्तर में जनपद संतकबीर नगर एवं बस्ती की सीमायें लगती है। गंगा की सहायक सरयु (घाघरा) नदी के नाम से जानी जाती है। जनपद संतकबीर नगर, बस्ती और बसखारी के मध्य सीमा बनाती हुई बहती है।

विकास खण्ड बसखारी की स्थापना 1 मई 1957 को हुई थी, विकास खण्ड का मुख्यालय जनपद मुख्यालय से 25 किमी0 की दूरी पर पूर्व में स्थिति है। 2011 की जनगणना के अनुसार, विकास खण्ड का कुल भौगोलिक क्षेत्र 211 वर्ग किमी0 है जो जनपद के कुल क्षेत्रफल का लगभग 9 प्रतिशत है। वर्ष 2017 के नगर निकाय परिसीमन के दौरान विकास खण्ड के तीन ग्राम सभा बसखारी, मखदूमनगर, तथा मानिकपुर के नगर पंचायत अशरफपुर किछौछा मे शामिल कर लिया गया है।

अध्ययन क्षेत्र बसखारी विकासखण्ड का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 204.57 वर्ग किमी0 है। अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग अनेक कारकों भौतिक, आर्थिक, सामाजिक आदि का परिणाम है। इसके अलावा धरातलीय दशायें, जलवायु, मिट्टीयॉ आदि प्राकृतिक तत्वों

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

ने इसे प्रभावित किया है, साथ ही साथ मानवीय क्रिया कलाप का भी प्रभाव पड़ा है। वर्ष 2010 से 2022 के मध्य अध्ययन क्षेत्र में भूमि–उपयोग में होने वाले परिवर्तन को निम्नलिखित सारणी द्वारा समझा जा सकता है।

विकासखण्ड बसखारीः भूमि के उपयोग में परिवर्तन (हेक्टेअर में)

क0सं0	भूमि उपयोग	2010–11	2015–16	2021–22
01	वन	12	12	12
02	कृष्य बेकार भूमि	269	274	313
03	वर्तमान परती	286	230	269
04	अन्य परती	610	455	279
05	ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	224	206	198
06	कृषि के अतरिक्त अन्य उपयोग भूमि	4628	4811	5091
07	चरागाह	25	30	23
08	उद्यान एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल	143	126	64
09	शुद्ध बोया गया क्षे0	14260	14257	14471
10	एक बार से अधिक बोयागया क्षे0	9722	9876	10151
11	कुल प्रतिवेदित भूमि	20457	20401	20720

उपर्युक्त सारणी से स्पषट है कि अध्ययन क्षेत्र विकासखड बसखारी में भूमि के उपयोग में परिवर्तन देखने को मिलता है। अध्ययन क्षेत्र में जहां 2010–11 में कृष्य बेकार भूमि 269 हेक्टेअर थी। वर्ष 2021–22 में बढ़कर 313 होगई इसका मुख्य कारण रासायनिक ऊर्वरकों का अधिकाधिक उपयोग तथा अधिक सिंचाई है। अध्ययन क्षेत्र में वर्तमान परती भूमि तथा अन्य परती भूमि की स्थिति में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। वर्ष 2010–11 मे क्रमशः 286 और 610 हेक्टेअर थी जो 2021–22 मे घटकर 269 तथा 279 हेक्टेअर रह गयी। वर्तमान परती भूमि एवं अन्य परती भूमि में कमी का कारण तिव्रगति से बढ़ती हुई जनसंख्या के भरण पोषण के लिये कृषि क्षेत्र का विकास करना है। ऊसर कृषि के अयोग्य भूमि का क्षेत्रफल 210–11 में 224 हेक्टेअर था, जो वर्ष 2021–22 में घटकर 198 रह गया तो वहीं कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि का क्षेत्रफल 2010–11 में 4628 हेक्टेअर से बढ़कर वर्ष 2021–22 में 5091 हेक्टेअर हो गया इसमें वृद्धि का मुख्य कारण आधार भूत संरचनाओं (सड़क–मार्ग, आवास आदि)का विकास एवं तिव्र गति से आर्थिक विकास रहा है। अध्ययन क्षेत्र में 2010–11 में कृषि क्षेत्र में शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 9722 हेक्टेअर था जो वर्ष 2021–22 में बढ़कर 14471 हो गया अध्ययन क्षेत्र में कृषित भूमि के क्षेत्र में परिवर्तन का मुख्य कारण जनसंख्या वृद्धि के साथ नवीन अधिवासों का निर्माण, शिक्षण संस्थाओं का निर्माण, सड़क निर्माण तथा उद्योगों का विकास है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Singh, U. B.(1999-2000): 'Agricultural Geography', Kedarnath Ramnath Prakashak, First Edition, Page-114.
2. Stamp, L.D. (1950): "The Land Use of Britain - its use and misuse", London, P.83.
3. Chaterjee, S.P. (1975): "The Pattern of Land Utilization in and around, Tarkeshwar Town", Geographical Review of India, Vol.37. No.1, P.72
4. Tripathi, Naresh Chander & Singh, Sunit Kumar:, Ist Edition, Page-202-206.

*****